

२८ ४/५

॥
पत्रावली चैत्र हुयी। वहुलाप अनुपाठिए हँ। बार-बार
आवाज लगायी गयी। वादी व. जालवादी श्री उपस्थित-ही
आया। अतः पत्रावली में कोई उपस्थित नहीं होने
से पत्रावली अक्षय हाजिरी अक्षय पैरकी में खार्पिल
की जाती है। पत्रावली जालल शुभाए होकर नखर
सकत है। वाद इति काबले रणवर है।

सहायक कलक्टर
बानसुर (असवर)